Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुज़्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **23.10.15** जर्मनी।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

यह अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और एहसान है कि हर एक यात्रा में अपने समर्थन एंव सहायता के निशान दिखाता है। फ़रमाया- पिछले दिनों मैं हॉलैंड तथा जर्मनी के दौरे पर था। टन स्पेट एक स्थान जहाँ हमार सैन्टर है वहाँ के एक मेज़्बर पार्लिमैंट जिनसे दो तीन साल पहले जमाअत का परिचय हुआ था और वे मुझे भी हॉलैंड के जलसे में मिल चुके हैं। उनके द्वारा हॉलैंड के पार्लिमैंट हाउस में एक फ़ंकशन कराने का अल्लाह तआला ने प्रबन्ध करा दिया। अल्लाह तआला की कृपा से हॉलैंड की जमाअत की परिस्थितयों को समाने रखते हुए यदि देखा जाए तो मेरे विचार में काफ़ी अच्छा आयोजन हो गया।

इस प्रोग्राम में 89 कर्मठ लोग शामिल हुए जिनमें डच पार्लिमैंट के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त स्पेन, आयर लैंड, स्वीडन, करोशिया, मोन्टी नीगरो, अलबानिया, फ्रांस, स्विट्ज़र लैंड, बैल्जियम, जर्मनी, फ़िलपाईन, डैनमार्क तथा साईप्रस से सज़्बंध रखने वाले पर्लिमैंट के मेज़्बर, एज़्बैसिडर तथा कुछ अन्य सरकारी अधिकारी तथा प्रतिनिधि शामिल थे। अतः हॉलैंड की जमाअत ने अब जो काम किया है, सज़्बंध स्थापित किए हैं मीडिया से सज़्मर्क किए हैं। मुझे आशा है कि वे इसे और आगे बढ़ाने का प्रयास करेगी और जो काम उन्होंने कर दिया अब तक, इसको ही पर्याप्त नहीं समझेंगे। वहाँ पार्लिमैंट हाउस में जो फ़ंक्शन था वहाँ मैंने अटठारह बीस मिन्ट तक संक्षेप में इस्लाम की शिक्षा तथा वर्तमान प्रस्थितियों के बारे में समस्याएँ बयान कीं। इस प्रोग्राम में शामिल मेहमानों तथा प्रोग्राम सुनने वाले जो ग़ैर थे, उनपर इस्लाम की शिक्षा का अच्छा प्रभाव पड़ा है।

अतः यह अल्लाह तआला का काम है इस प्रकार वह दिलों पर अधिकार जमाकर धाक बिठा देता है। इंसान के प्रयत्न तो कुछ भी नहीं कर सकते। यह प्रोग्राम आयोजित होना स्वयं अपने आपमें अल्लाह तआला का विशेष फ़ज़्ल है अन्यथा हॉलैंड की जमाअत यदि कहे कि किसी के प्रयास से हुआ है या जमाअत के प्रयासों से हुआ है अथवा किसी व्यक्ति विशेष के प्रयास से हुआ है तो ग़लत है। बल्कि मेरा विचार है कि अधिकांश यही कहेंगे कि हमें तो समझ नहीं आई कि यह कैसे हो गया। जिन पार्लिमैंट के मेज़्बरों ने इसका प्रबन्ध किया था उन्होंने कहा कि, मुझसे अनेक पार्लिमैंट के मेज़्बरों ने पूछा कि यह प्रोग्राम किस प्रकार आपने आयोजित करा लिया। तो केवल अपने ही नहीं अपितु ग़ैरों की दृष्टि में भी यह बड़ा कठिन था कि एक छोटी सी जमाअत का प्रोग्राम इस प्रकार पार्लिमैंट हाउस में आयोजित कराया जाता। ये पर्लिमैंट के मेज़्बर कहते हैं कि यह प्रोग्राम जो था, मेरी आशा के अनुसार उपस्थिति के बारे में तथा जो विषय बयान हुआ है उसके अनुसार बड़ा सफल रहा और ये कहते हैं कि अब इसके परिणाम बड़ी दूर तक जाएँगे क्यूँकि इमाम जमाअते अहमदिया ने अपना पैग़ाम अति प्रभाव शाली रंग में दिया। हॉलैंड के लोगों का यह अधिकार है कि उनको इस्लाम का शांति प्रिय चेहरा भी दिखाया जाए, उनको इस पैग़ाम की आवश्यकता है। ख़लीफ़तुल मसीह के साथ पार्लिमैंट की यह गोष्ठि पहला क़दम था अब हम और इस प्रकार के प्रोग्रामों का आयोजन करेंगे। फिर अन्य अनेक आदरणीय मेहमानों ने इस प्रोग्राम की सराहना करते हुए इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का चेहरा दिखाने पर आभार प्रकट किया। हॉलैंड के भूतपूर्व गृह मंत्री भी इस प्रोग्राम में शामिल हुए। फ़ंक्शन के पश्चात भी मेरे साथ बड़ी देर तक बैठे रहे और बातें करते रहे। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आपके पैग़ाम से इस्लाम का वास्तविक चेहरा देखने का सुअवसर मिला है तथा अब यह इच्छा है कि आप बार बार हॉलैंड आएँ ताकि लोगों के दिल से इस्लाम का भय निकल जाए। फिर कहते हैं कि पार्लिमैंट्री कमैटी के प्रश्नों पर आपके उत्तर किसी भी उचित सोच रखने वाले व्यक्ति की आँखें खोल देने के लिए काफ़ी थे।

फिर इस समायोजन में स्पेन के एज़्बैसिडर भी आए हुए थे वे कहते हैं कि विशेषकर जिस प्रकार इमाम-ए-जमाअत ने freedom of speech सहन शीलता और अन्य धर्मों के लिए मान सज़्मान जैसे भावुक प्रश्नों के उत्तर दिए, वे अति उपयुक्त थे तथा फिर यह भी कि भाषण की बीच सहन शीलता, धार्मिक स्वतंत्रता और बन्धुत्व के बारे में जो बातें इस्लाम की

शिक्षा के अनुसार बयान कीं, ये दिल को लगती हैं और मैं इनका समर्थन करता हूँ क्यूँकि धर्मों के बीच सहिष्णुता तथा विश्व शांति के लिए इन बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है।

स्पेन के मेज़्बर ऑफ़ पार्लिमैंट कहते हैं कि मानवता के लिए शांति, स्वतंत्रता तथा ख़ुदा तआला ने जो सारी सृष्टि की उत्पत्ति करने वाला है, उसके साथ प्रेम का लुभावना संदेश सुनकर प्रसन्नता हुई। एक ऐसी दुनिया के लिए जहाँ युद्धों तथा धर्म के नाम पर किए जाने वाले अन्याय में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है इस स्तर के शांति सन्देश पर हमको आभारी होना चाहिए। आज पहले से बढ़कर उन सब लोगों को जो अमन चाहते हैं तथा धार्मिक हैं उन्हें संगठित होना चाहिए। हमें उन बातों पर ध्यान देना चाहिए जो हमारे बीच एक समान हैं बजाए इसके कि हम अपने बीच पाए जाने वाले मतभेदों पर ज़ोर दें।

मोन्टी नीगरो से भी तीन दोस्त आए थे एक मेज़्बर ऑफ़ नेशनल पार्लिमैंट थे। ये कहते हैं कि यह आयोजन जमाअत के लिए एक बहुत बड़ी सफलता है कि उनके इमाम ने इस्लाम की वास्तविक शिक्षा अति उत्तम स्तर पर पेश की। हॉलैंड की पार्लिमैंट के मेज़्बरों के प्रश्न बड़े कठोर थे परन्तु उन्होंने उत्तर बड़े तर्क पूर्ण तथा यथार्थ पर आधारित दिए और इस बात से प्रकट होता है कि इमाम-ए-जमाअत साहस और आत्म विश्वास तथा तर्क के साथ बात करते हैं। उन्होंने कहा कि आज की भय-युक्त दुनिया में इस प्रकार के आयोजन की बड़ी आवश्यकता है।

ह्यूमन राईटस डिफ़ैन्स की दो मेज़्बर वहाँ थीं। वे भी कहती हैं कि यह पैग़ाम जो पार्लिमैंट में दिया गया यह समस्त पॉलिसी बनाने वालों तक पहुंचाया जाना चाहिए।

करोशिया से उनकी सत्ताधारी पार्टी के एक मेज़्बर ऑफ़ पार्लिमैंट आए हुए थे। वे कहते हैं इमाम-ए-जमाअत ने इस्लाम की शिक्षाओं को बड़े ही स्पष्ट एंव प्रभाव पूर्ण रंग में बयान किया। विश्व में शांति स्थापना के लिए इस्लाम की शिक्षाएँ बड़ी प्रभावी हैं यदि समस्त मुसलमान शिक्षाओं के अनुसार सत्य मन से कर्म करें तो दुनिया अमन का गहवारा बन सकती है। उन्होंने कहा कि freedom of speech के विषय में अहमदिया जमाअत के पेश्वा ने जो दो टूक बात की वह अत्यंत प्रभाव पूर्ण थी विशेषकर होलो कोस्ट के बारे में कुछ देशों में जो पाबन्दियाँ हैं उनके संदर्भ ने इनके विचार को और अधिक बल दिया। फिर कहते हैं इस वास्तविकता के बावजूद कि पाकिस्तान में अहमदियों पर अत्याचार हुए हैं अहमदिया जमाअत के पेश्वा पाकिस्तान पर सीधे आलोचना से बचते हुए तथा उत्तम रंग में वास्तविक इस्लामी शिक्षानुसार मुसलमानों को कर्म करने का उपदेश दिया जो कि प्रभाव पूर्ण था। कहते हैं हथ्यारों पर पाबन्दी तथा फ़ंडिंग को रोकने पर जो बयान दिया वह अत्यंत सत्यप्रिय था। वास्तव में यदि दुनिया के शक्ति शाली देश इन बिन्दुओं पर गज़्भीरता और ईमानदारी से विचार करें तो दुनिया अमन की ओर वापस लौट सकती है।

स्वीडन से आने वाले मेज़्बर ऑफ़ पार्लिमैन्ट कहते हैं कि सज़्बोधन वास्तव बड़ा अच्छा था, प्रभाव छोड़ने वाला था और धार्मिक नेता होने के रूप में आपने दुनिया के सत्ता पक्ष के लोगों को झंझोड़ा है। सज़्बोधन में एक सच्चाई थी कोई भेद नहीं था अमन, इंसाफ़, सहिष्णुता, मानवता, प्रेम तथा भाई चारे के विषय में इमाम-ए-जमाअत ने बड़े सरल शब्दों में ध्यान दिलाया है तथा विश्व को एक सन्देश दिया है।

एज़्सटर्डम यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ैसर जो बुद्धिज़्म, इस्लाम तथा अन्य धर्मों के माहिर हैं। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इमाम-ए-जमाअत ने इस्लाम की अमन के बारे में शिक्षा का जिस स्पष्ट रंग में वर्णन किया इससे मुझे इस बात का अनुमान हुआ कि हमारे इन्टर फ़ेथ डॉयलाग के प्रोग्रामों में जमाअत का प्रतिनिधित्व आवश्यक है। अब जमाअत को हमारे प्रोग्रामों में अवश्य शामिल होना चाहिए ताकि इस्लाम की वास्तविक रूप रेखा हमारे सामने आ सके।

चार पाँच दिन हॉलैन्ड में निवास के दौरान तो प्रतिदिन ही किसी न किसी अख़बार, रेडियो और टेलीवीज़न के प्रतिनिधि आकर इन्टर व्यू लेते रहे। बड़ी लज़्बी इनके साथ वार्ताएँ होती रहीं। आधे घन्टे से लेकर तीस पैंतीस मिन्ट तक भी एक एक इन्टर व्यू हुआ जिसमें उनको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्तर, दावे, इस्लाम की शिक्षाएँ, विश्व शांति तथा ख़िलाफ़त इत्यादि के विषयों पर बताया गया। सामूहिक रूप से यदि देखा जाए तो मीडिया के द्वारा हॉलैन्ड में उनकी इस बार की पहली कोशिश में आठ मिलयान लोगों तक पैग़ाम पहुंचा है।

हॉलैन्ड में जमाअत की दूसरी मस्जिद की आधार शिला रखने का भी सौभाग्या मिला। अल्लाह तआला इसका निर्माण भी शीघ्र ही पूरा कराए। 60 वर्षों के बाद जमाअत वहाँ औपचारिक मस्जिद बना रही है। सैन्टर तो हैं, एक दो सैन्टर लिए थे

परन्तु औपचारिक रूप में मस्जिद नहीं थी और यह समय की बड़ी आवश्यकता थी कि मस्जिद होती। आधार शिला के प्रोग्राम में शामिल मेहमानों की सामूहिक संज़्या 102 थी। अल्मेरे नगर जहाँ मस्जिद बन रही है वहाँ के मेयर, जज साहिबान, वकील, डाक्टर्स, आर्किटैक्टस, धार्मिक लीडर तथा जीवन के विभिन्न विभागों से सज़्बंधित मेहमान शामिल थे। इसके अतिरिक्त अलबानिया, मोन्टी नेगरो, करोशिया, स्वीडन, स्पेन और स्विट्ज़र लैन्ड के जो मेहमान एक दिन पहले फ़ंक्शन पर आए हुए थे वे भी शामिल हो गए।

अल्मेरे के मेयर साहब ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आपकी बातें सुनकर मन पर बड़ा प्रभाव पड़ा है तथा यह पैग़ाम जो आपने दिया है एक शांति पूर्ण वातावरण स्थापित करने के लिए अति प्रभाव पूर्ण है और हम सबको मिलकर इसको वास्तव में प्रचलित करने का प्रयास करना चाहिए। फिर ये कहते हैं कि हमें आशा है कि मस्जिद के माध्यम से यह पैग़ाम, शांति सन्देश अवश्य फैलेगा।

वहाँ के एक लोकल कौन्सलर कहते हैं कि यह पैग़ाम जो है समस्त बुद्धि जीवियों के लिए मार्ग दर्शन है।

एक राजनैतिक पार्टी, लिबरल पार्टी के लीडर कहते हैं कि लगता है कि भविष्य में आपकी जमाअत ही विश्व में शांति का प्रतीक होगी।

वहाँ एक मुस्लिम रेडियो भी चलता है नैशनल मुस्लिम रेडियो के नाम से। जिस दिन मस्जिद की आधार शिला का प्रोग्राम था उसी दिन नैशनल मुस्लिम रेडियो ने साढ़े चार मिन्ट की रिपोर्ट अल्मेरे मस्जिद के निर्माण के विषय में प्रसारित की जिसमें हज़रत मसीह मौऊद के पुनः आने के विषय में बताया और मेरे विषय में भी बताया कि मसीह मौऊद के ख़लीफ़ः हैं और अल्मेरे मस्जिद में आधार शिला के लिए पधारे हैं। इस रिपोर्ट में आधार शिला समारोह के अवसर पर जो सज़्बोधन था उसके भी कुछ अंश सुनाए।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- इसके बाद जर्मनी में दो मस्जिदों की आधार शिला रक्खी। वहाँ भी शहर के आदरणीय लोग तथा शिक्षित वर्ग आया हुआ था यहाँ भी अच्छे समारोह हुए, जमाअत का परिचय तो वहाँ है, और अधिक हो गया। हॉलैन्ड से जर्मनी जाते हुए नोर्ड हार्न में मस्जिद की आधार शिला रक्खी। फिर वहाँ एक टी वी चैनल ने इन्टर व्यू भी लिया, प्रसारण भी किया। एक भूतपूर्व मेयर भी वहाँ आए हुए थे समारोह के बाद कहने लगे कि मैंने अपने साथियों को कह दिया है कि इस इतवार को चर्च जाने की आवश्यकता नहीं है तुज़्हें, क्यूँकि जो कुछ हमारे लिए आवश्यक था वह उनके ख़लीफ़ः ने कह दिया है। तो इस प्रकार भी कुछ लोग भावनाएँ व्यक्त करते हैं। अल्लाह तआला वास्तव में भी उनके दिल खोले तथा वास्तव में इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को समझकर क़बूल करने वाले हों। एक जर्मन महिला कहने लगीं कि वास्तव में यह बड़ा अच्छा समारोह था, मैं इस्लाम के विषय में अधिक नहीं जानती परन्तु आज जिस प्रकार ख़लीफ़तुल मसीह ने मुझे समझाया है , मुझे इसका वास्तविक ज्ञान मिला है। फिर एक जर्मन कहते हैं कि में कैथोलिक धर्म से हूँ तथा आज मैंने एक और सुन्दर धर्म अर्थात इस्लाम के विषय में सीखा है। ख़लीफ़ः की तक़रीर से मुझे इस्लाम पर अधिक अनुसंधान करने की जिज्ञासा हुई है उन्होंने हमें इस्लाम की सत्यता के विषय में बताया। कहते हैं कि मुझे पता चला है कि इस्लाम का आधार प्रेम, स्वतंत्रता तथा अमन पर स्थापित है। मुझे सबसे अच्छी बात यह लगी है कि उन्होंने कहा है कि इस्लाम पड़ौसियों के अधिकारों पर बड़ा बल देता है। एक जर्मन महिला कहती हैं कि मैं धार्मिक नहीं हूँ तथा न ही मैं किसी धर्म को मानती हूँ बल्कि मुझे यह भी नहीं पता कि दुनिया में एक ख़लीफ़ः है परन्तु आज जब मैंने इस ख़लीफ़ः को देखा और सुना है तो कहती हैं कि आज मैं इसके बाद इस्लाम के विषय में उत्तम विचार लेकर जा रही हूँ। मैंने सीखा है कि मस्जिद केवल इबादत के लिए ही नहीं है बल्कि मानव सेवा के लिए भी है। मैंने सीखा है कि मस्जिद पड़ौसियों की सेवा करने की भी जगह है। मैंने सीखा है कि मस्जिद शांति के प्रचार का स्थान भी है। इस्लाम के विषय में सभी प्रश्न अथवा भय जो किसी मनुष्य के मस्तिष्क में हो सकते हैं इमाम-ए-जमाअत के सज़्बोधन से दूर हो जाते हैं। एक जर्मन महिला ज़ी इस अवसर पर आई हुई थीं ये अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहती हैं कि जो आपका निज़ाम है इसमें प्रत्येक मनुष्य एक सुलझा हुआ मानव दिखाई दे रहा है। फ़रमाया- ये प्रतिक्रियाएँ जो लोगों की होती हैं ये हमें यह याद कराने के लिए ज़ी हैं कि हमें सदैव अपने व्यवहार ऐसे रखने चाहिएं कि सदा सुलझे हुए ही दिखाई दें। ये केवल अस्थाई रूप से ही नहीं बल्कि अपने भीतर सदा के लिए बनाएँ। अतः ये लोग समझते हैं कि स्वतंत्रता के नाम पर बच्चों को यह शिक्षा दी जा रही है, बहुत कुछ है, यहाँ के रहने वाले लोग स्वयं बड़े

व्याकुल हैं इन बातों से, इस लिए अपने बच्चों को हमें भी विशेष रूप से घरों में समझाना चाहिए कि प्रत्येक बात जो है उनकी सत्य नहीं है बल्कि तुम्हें इस्लाम के निर्देशों की ओर देखना अति आवश्यक है और इनका ध्यान रक्खो।

इसी प्रकार एक पति-पत्नि वहाँ बैठे हुए थे वहाँ एक अहमदी से पर्दे के विषय में वाद विवाद आरम्भ हो गया। उन्होंने सवाल किया कि महिलाएँ क्यूँ नहीं हैं केवल पुरुष ही क्यूँ दिखाई दे रहे हैं। महिलाओं के लिए अलग मार्की क्यूँ है? जब उन्होंने मेरा सम्बोधन सुन लिया और फिर उन्हें पर्दे का उद्देश्य भी बताया गया कि क्या कारण है तो फिर कहने लगीं कि पश्चिम में महिलाओं की स्वतंत्रता केवल ऊपर ही ऊपर है और यह वास्तविक आज़ादी नहीं है और कहती हैं कि अब जो आपने पर्दे का concept मुझे समझाया है, अब मुझे समझ में आया है कि इसी में महिलाओं की शान है। इस प्रकार ग़ैरों को इस्लामी शिक्षा समझ आ रही है इस लिए हमारी महिलाओं में भी पर्दे के विषय में जो complex हो जाता है कई बार, वह नहीं होना चाहिए तथा उनका आत्म-विश्वास बढ़ना चाहिए, न कि किसी प्रकार की झेंप या बनावट हो।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बहुत से मेहमानों के ईमान वर्धक अनुभव बयान फ़रमाए। फिर फ़रमाया- जामिअः अहमदियः जर्मनी की पहली कक्षा भी सात साल पूरे करके आपनी विद्या पूरी करके इस बार पास हुई है। 16 मुबल्लिग़ तय्यार हुए हैं उनका वार्षिक समारोह जी था, जर्मनी जाने का वास्तविक उद्देश्य तो यही था। 2008 ई. में यहाँ जामिअः शुरु हुआ था, बैतुस्सुबूह की छोटी सी बिल्डिंग में कुछ कमरों में और अब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से उन्होंने जामिअः की विधिवत इमारत तय्यार की है जिसमें सारी सुविधाएँ हैं।

ख़ुत्बः जुम्अः के अन्त पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के बेटे मिर्ज़ा अज़हर अहमद साहब के जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई तथा आपके सद्गुण बयान फ़रमाए जिनका निधन 14 अक्तूबर 2015 को हो गया था। सैय्यना हुज़ूर अनवर ने मिर्ज़ा अज़हर अहमद साहब के सुन्दर आचरणा बयान करते हुए यह बिन्दु भी बयान फ़रमया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने इनके निकाह के खुत्बः में फ़रमाया था कि आज जिस निकाह के ऐलान के लिए मैं खड़ा हुआ हूँ वह मेरे लड़के मिर्ज़ा अज़हर अहमद का है जो ख़ान सईद अहमद ख़ान मरहूम की लड़की क़ैसर ख़ानम के साथ तय पाया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि खेद है कि हमारी जमाअत अपने इतिहास को याद रखने में बड़ी ढीली है शायद ही कोई और क़ौम ऐसी हो जो अपने इतिहास को याद रखने में इतनी सुस्त हो जितनी हमारी जमाअत है। ईसाइयों को ले लो उन्होंने अपने इतिहास को याद रखने में इतनी सुस्ती से काम नहीं लिया और मुसलमानों ने तो सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम के हालात को इतनी विस्तार पूर्वक बयान किया है कि इस विषय पर कुछ पुस्तकें कई कई हज़ार पृष्ठों पर आधारित हैं परन्तु हमारी जमाअत इसके बावजूद कि एक शिक्षित युग में पैदा हुई है अपने इतिहास को याद रखने में बड़ी ग़फ़लत से काम ले रही है। सैय्यदना हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया- अतः जिस बात का ध्यान रखना चाहिए, लोगों को ध्यान देना चाहिए पहले भी ध्यान दिलाया गया है कि अपने इतिहास को, अपने पारिवारिक इतिहास को याद रखने का प्रयास करें तथा जो सहाबा है उनका वर्णन होना चाहिए, उनके विषय में लिखा जाना चाहिए। इसके ऐतिहासिक महत्व के कारण ही मैंने यह कुछ अंश बयान किया मुझे ध्यान आया कि मैंने उनकी पत्नि का कुछ वर्ष पूर्व निधन हुआ था उसमें भी बयान किया था तो अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला उनसे रहम का सलूक फ़रमाए और अपने प्यारों के चरणों में स्थान प्रदान करे।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwer Ayyadahullhu Ta'la 23.10.2015

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*